Research Paper E-ISSN NO : 2455-295X | VOLUME : 9 | ISSUE : 11 | NOVEMBER 2023

भारत में हिंदी भाषिक किसान चैनलों की प्रासंगिकता का विश्लेशणात्मक अध्ययन

डॉ. दीप्ति भट्ट [1]
1

ABSTRACT:

KEYWORDS:

प्रस्तावना–

भारत राष्ट्र एक कृषि प्रधान देश है अक्सर कृषि लेखों की शुरुआत इसी वाक्य से होती है। ग्रन्थों में कहा गया है कि 'अन्नम वै प्राणिनां प्राणः'' अन्न प्राणियों का जीवन है अर्थात् प्राण है। प्राण ही जीवन एवं जीवन ही प्राण होता है प्राण नहीं वो जीवन नहीं है और हम सब इस वाक्य से भली भांति परिचित है। अन्न को उगाने की कला का नाम कृषि है, कृषि एक विज्ञान है जिसमें फसल को उगाने से लेकर उसके बाजारीकरण तक का सूक्ष्म ज्ञान निहित है इसी विज्ञान को जानने समझने और उसके व्यावहारिक प्रयोग का अनवरत साधना का काम करने वाले किसान कहलाते हैं। असली अन्नदाता यहीं है और तो गौंण रुप।

आज रोजमर्रा की झझावतों के साथ प्राकृतिक आपदाओं विपदाओं से दो हाथ कर हमारे समाज का अति महत्वपूर्ण अंग है यूं कहें कि, हमारे जीवन की प्राण वायु शक्ति को चलायमान रखने के एक महत्वपूर्ण कारको को पूरी ईमानदारी से पालन करने वाले ये किसान है। भारत राष्ट्र में कृषि और किसानों के हालात दिनों–दिन बदतर होते जा रहे हैं जिसके कारण अनेकों किसान आत्महत्या तक करने पर मजबूर हो रहे है। भारत में आज भी 60 प्रतिशत से 70 प्रतिशत लोग कृषि पर निर्भर है। इस समस्या को हर सरकार जानती है पर उसके पास उचित समाधान नहीं है। भारतीय किसानों की हालात बहुत खराब है। इस पर लोग केवल बहस करते हैं। राजनीति करते हैं और हाय तौबा मचाकर भूल जाते हैं, परंतु इस हेतु कोई स्थायी समाधान ढुंढने का प्रयास नहीं किया जाता है।

➢ भारतीय कृषि (किसान) की बुरी हालात होने के कारण और समस्याएं

भारतीय किसानों के खराब हालात होने के कई प्रमुख कारण है जिसके बारे में हमारे समाज, हमारे राजनेताओं और हमारी सरकार और हर एक व्यक्ति को सोचना चाहिए जो सक्षम है उनकी मदद करने के लिए आगे आये। यदि समस्या बहुत बड़ी है तो हम सब को मिलकर इस हेतु कोई ठोस हल निकालने की जरुरत है।

• भारतीय मानसून

भारतीय मानसून यहां के किसानों के लिए जुए की तरह है। यहां प्रति दशक में 6–7 वर्ष वर्षा या तो कम होती है या बहुत अधिकता के कारण फसलें खराब हो जाती है।

• निम्न तकनीक होना/ उच्च तकनीक का अभाव

आजादी से लेकर आज तक जिस गति से उच्च तकनीकी का विकास होना था वो नहीं हुआ। यहां इजराइल जैसे देखें से उच्च तकनीकी लेकर कृषि क्षेत्र में आगे बढ़ना चाहिए।

• उन्नत बीजों, उर्वरक का अभाव

भारत में कृषि शिक्षा, उच्च तकनीकी के अभाव में यहां नए उन्नत बीजों, नई–नई प्रकार की दवाईयां, खादे आदि का अभाव पाया जाता है।

• उपजाऊ भूमि का अभाव

तकनीकी के अभाव और अशिक्षित किसान के एक ही जगह बार बार कृषि करने से उपजाऊ भूमि की कमी होती जा रही है।

• फसल का उचित मूल्या ना मिलना

आजादी के बाद प्रथम व द्वितीय पंचवर्षीय योजना से लेकर कृषि क्षेत्र में आज तक उत्तरोत्तर कृषि पैदावार में बढ़ोतरी हो रही है परंतु सही प्रबंधन/योजना न होने के कारण किसानों को उचित मूल्य नहीं मिल पा रहा है।

• भारतीयों की सोच का प्रभाव

यह बात कहीं हद तक सही चिरतार्थ होती है चूंकि भारतीय सिर्फ अपने तक ही सोच रखता है। वह अपने आप या परिवार, समाज में ज्यादा परिवर्तन करने या होने में विश्वास नहीं करता है।

• भारतीय शिक्षा

भारतीय शिक्षा बेरोजगारी फैलाने वाली व तकनीकी रहित है। भारतीय शिक्षा में कृषि तकनीकी, कृषि समस्या, समाधान आदि विषयों को अनिवार्य लागू करने की आवश्यकता है।

• भारतीय राजनीति

भारतीय राजनीति इतनी खराब है कि इसमें अच्छे लोग बहुत कम आते हैं और इसी कारण किसानों की समस्या जस की तस ही बनी रहती है।

• कृषि से संबंधित सरकारी केंद्रों की निष्क्रियता

भारत सरकार द्वारा संचालित कृषि संस्थान/महाविद्यालय/विश्वविद्यालय में कार्य करने वाले कर्मचारी गरीब किसानों की समस्याओं को हल करने के लिए उनसे घूस लेते है परिणाम मजबूर किसान आत्महत्या का मार्ग चुनते है।

• कृषकों का लिया हुआ कर्ज

भारत के अधिकतर किसानों के अशिक्षित होने के कारण, आस–पास के साहूकारों से कर्ज उधार लेते हैं जो 70 प्रतिशत से 120 प्रतिशत तक सूद लेते हैं, जबकि यहीं बैंकों से 12 प्रतिशत से 17 प्रतिशत तक मिल जाता है। अतः सरकार को चाहिए कि इस हेतु किसानों का ध्यान बैंकों की और दिलायें।

• कृषि शिक्षा का अभाव

हमारे देश में 1.25 अरब लगभग आबादी है, और 70 प्रतिशत देश की आबादी कृषि पर आधारित है परंतु देश में कृषि शिक्षा के विश्वविद्यालय और कॉलेज तकनीकी शिक्षा के कॉलेज नाम मात्र के है। उच्च शोध शिक्षा, प्रबंधन आदि का अभाव होना भी कृषि समस्याओं के बढ़ने का प्रमुख कारण है।

• भुमि प्रबंधन का अभाव

अच्छा भूमि प्रबंधन न होने के कारण, कौनसी खेती कब व किस मात्रा में

करनी चाहिए, आयात–निर्यात कितना करना चाहिए, कितने भण्डार होने चाहिए? ये सब नहीं हो पाता।

- **भूमि अधिग्रहण नीति का अभाव**

केन्द्र/राज्य सरकारों अथवा विभिन्न विकास प्राधिकरणों द्वारा भूमि अधिग्रहण ऐसी भूमि का करना चाहिए जो बंजर हो, कृषि योग्य न हो परंतु अल्प जानकारी के कारण, सरकार द्वारा कई बार अत्यधिक उपजाऊ भूमि का अधिग्रहण कर लिया जाता है।

- **साख प्रबंधन**

इसके दौरान ग्राम स्तर पर एक कृषि केन्द्र हो जहां कृषि कर्मचारी आवासीय कार्यालय के रुप में यहां हमेशा रहे और किसानों को कम/सही लागत पर बीज, उर्वरक, निराई, गुड़ाई, ट्रेक्टर, मशीन, दवाई आदि उपलब्ध कराए, ताकि लघु सीमान्त किसानों को फायदा हा सके।

- **कृषि आधारित उद्योग–धंधे**

भारत में कृषि आधारित उद्योग धंधे बहुत कम सफल हुए है इसका कारण है या तो ये कृषि क्षेत्रों से दूर स्थापित है या इनका प्रबंधन सही नहीं है। इसका प्रमुख कारण किसान, सरकार, कर्मचारी वर्ग का कहीं न कहीं निष्क्रियता होना भी प्रमुख है।

➢ कृषि/किसानों की समस्या, समाधान

1. सरकार को उपजाऊ भूमि की उपलब्धता किसानों को आसानी से करनी चाहिए।
2. कृषि सिंचाई की आधुनिक तकनीकों की ओर सरकार का ध्यान।
3. किसानों को सरकार उन्नत बीज, उर्वरक सही समय और उचित दामों पर उपलब्ध कराए।
4. सरकार को अच्छे भण्डारण की व्यवस्था करनी चाहिए।
5. किसानों को सस्ते, साधनों की उपलब्ध प्रदान करना चाहिए।
6. किसानों को उन्नत नयी नयी तकनीकों को प्रत्यक्ष जानकारी उपलब्ध कराना।
7. कृषि आधारित उद्योग धंधों की नजदीक ही स्थापना करवाना।
8. श्रम योजनाओं की जानकारी प्रदान करवाना।
9. कृषि संबंधी ऋण जैसे फसल ऋण, पान बाड़ी हेतु ऋण, लघु सिंचाई योजना संबंधी ऋण, बैल हेतु ऋण, भूमि सुधार ऋण, गोबर गैस प्लांट ऋण

(स) पशुपालन संबंधी ऋण

- बकरी पालन वित्तीय योजना
- दुग्ध विकास हेतु पशु क्रय योजना
- सुअर पालन ऋण योजना
- कुक्कड़ पालन ऋण योजना
- मछली पालन ऋण योजना
- अप्रत्यक्ष कृषि ऋण प्रदान करना
- ग्रामीण लघु व्यावसायियों को ऋण सहायता

नौका क्रय हेतु नाविकों को ऋण योजना

- फलों के बगीचे हेतु ऋण
- शासकीय सस्ते अनाज की दुकान हेतु ऋण
- कपड़े के व्यवसाय के लिए ऋण
- हाथ, ठेला या रिक्शा क्रय हेतु ऋण
- आटा चक्की हेतु ऋण

अन्य ऋण योजनाऐं

- वाहन क्रय हेतु ऋण
- उपभोग ऋण
- जमा राशियों एवं आभूषण पर ऋण
- ग्रामीण खाद व्यापार योजना
- किसान क्रेडिट कार्ड योजना
- व्यक्तिगत दुर्घटना बीमा योजना

कलराज मिश्र के अनुसार समस्या निवारण

1. कृषि लागत कम करने हेतु परम्परागत खेती पर जोर देना।
2. दोष रहित आयात निर्यात नीति का होना
3. भूमि प्रबंधन व फसल प्रबंधन की एक राष्ट्रीय नीति होनी चाहिए।
4. स्थानीय विपणन नेटवर्क की स्थापना करना।
5. मुख्य बाजार व बड़े शहरों से कृषि को जोड़ना।
6. कृषि उत्पादों की छंटाई, पैंकिंग, सप्लाई चेन की व्यवस्था प्रदान करना।

किसान समाधान सर्वेक्षण 2018–2019

यह सर्वेक्षण किसानों के लिए अत्यंत लाभदायक है, इसमें किसानों के तमाम समस्याओं पर प्रश्न और उनके समाधान बताए गए है जैसे –

1. क्या आपको सरकार द्वारा किसान हित में चल रही योजनाओं की जानकारी है। हां/नहीं
2. क्या आपके खेत की मिट्टी की जांच हुई है। हां/नहीं/कुछ की जानकारी है।

➢ कृषि विकास में हिंदी भाषी किसान चैनलों की प्रासंगिकता

पूरी दुनिया में चाहे एक व्यक्ति हो, समाज हो या कोई भी क्षेत्र हो, उसके विकास में किसी का योगदान कम तो किसी का सर्वाधिक होता है। उसी प्रकार कृषि विकास में यदि आज के संदर्भ में सर्वाधिक योगदान है तो वह है वर्तमान हिंदी किसान चैनल का।

प्राचीन समय में किसानों की समस्या का समाधान किसान चौपाल में बैठकर करते थे और सफल नहीं होते तो सब कुछ ईश्वर की कृपा मानकर उस पर छोड़ दते फिर इनका समाधान पाण्डूलिपि, पुस्तकों, अखबारों, पत्र पत्रिकाओं से होता हुआ आकाशवाणी रेडियो से देश दुनिया में किसी भी कोने में बैठे सुलभ रुप से होने लगा और आगे चलकर टेलीविजन की दुनिया की शुरुआत हुई। किसान अब अपनी समस्याओं का निस्तारण दृश्य के माध्यम से घर बैठे करवाने लगा और आज मोबाइल, पत्रिका, आदि अत्याधुनिक तकनीकी ने किसान की समस्याओं के निस्तारण में उत्तरोत्तर तरक्की की दिशा में अग्रसर है।

डी.डी. किसान टी.वी. चैनल– हैलो किसान इस चैनल पर प्रत्येक दिन किसान की हर एक साल हर एक समस्या का जान माने विषय विशेषज्ञों द्वारा फोन के माध्यम से सम्पूर्ण जानकारी घर बैठे दी जाती है।

डी.डी. नेशनल

दूरदर्शन नेशनल भारत में एक केन्द्रशासित हिन्दी चैनल है तथा इस पर सूबह शाम किसानों की समस्या, कृषि की समस्त जानकारी प्रमाण रुप से प्रदान की जाती है।

किसान गुरु एप

प्राचीन कृषि से डिजिटल कृषि की और एक सृजनात्मक कदम हैं किसान गुरु एप इस एप की राजस्थान सरकार ने शुरु किया है। इसमें कृषि से संबंधित सभी जानकारी समस्या समाधान उपलब्ध है।

ई.टी.वी. हिंदी चैनल पर अन्नदाता कार्यक्रम रोज लाइव आता है, इसमें किसानों की हर एक समस्या, हर एक फसलों पर जाने माने विषय विशेषज्ञों द्वारा समुचित जानकारी प्रदान की जाती है।

अन्नदाता – यह चैनल 24 घण्टे, पुरे सप्ताह किसानों को समस्या, खेती बाड़ी आदि समस्त प्रकार की जानकारी किसानों को लाइव उपलब्ध कराता है।

लाइव टुडे – इस चैनल पर किसानों की तमाम समस्या उनके समाधान की जानकारी विषय विशेषज्ञों द्वारा बहुत ही अच्छे ढंग से कराई जाती है।

कृषक जगत का यु–ट्यूब चैनल प्रारम्भ – देश एवं प्रदेश के किसानों एवं खेती से जुड़े समस्त लोगों के लिए कृषक जगत चैनल पर किसानों की समस्याएं, समाधान, विस्तारपूर्वक किया जाता है।

कृषक जगत अखबार – राष्ट्रीय कृषि अखबार है जो भोपाल, जयपुर, रायपुर के किसानों की समस्याओं, उनके समाधान करने की और सदैव प्रयासरत है।

'कलयुग की कलम' यह न्यूज चैनल और राष्टीय मासिक पत्रिका साथ ही मैग्जीन भी है, इसमें किसानों की गंभीर समस्याओं को दिखाया/छापा जाता है, और इनकी

समस्याओं की और सरकार का ध्यान आकृषित कर समस्या का त्वरित हल करवाया जाता है।

आवाज 5 PM यू ट्यूब चैनल यह हिंदी चैनल है जिसमें देश की गंभीर तात्कालिक समस्याओं को चाहे वो किसानों की हो या अन्य, को बहुत ही तार्किक ढंग से लाइव दिखाया जाता है।

मेहनतकश किसान चैनल

यह चैनल उत्तर भारत के हिंदी किसान चैनलों में अपना प्रमुख स्थान रखता है, इसमें किसानों की सभी समस्याओं का तार्किक ढंग से समाधान किया जाता है। उपरोक्त के अलावा उत्तर भारत के 10 हिंदी भाषी राज्या व केन्द्रशासित प्रदेशों में अपने अपने हिंदी भाषी किसान चैनलों/पत्रिका आदि कार्यक्रम किसानों की समस्त समस्याओं का निस्तारण करते हुए उत्तरोत्तर प्रयासरत है।

किसान सेवा केन्द्र

1. किसान ई सेवा केन्द्र (kissan.shop.in)
2. किसान पोर्टल (Google play)
3. मोबाइल किसान पोर्टल (mkisan.gov.in)
4. एग्रीकल्चर पोर्टल (www.krishi.rajasthan.gov.in)

निष्कर्ष

उपरोक्त जानकारी के आधार पर हम निष्कर्ष रुप में कह सकते है कि किसानों की वर्तमान समस्याएं बहुत है और उनके समाधान भी बहुत है पर किसानों की तमाम समस्याओं के समाधान में सर्वोत्तम समाधान करने में वर्तमान हिंदी भाषी किसान चैनलों एवं पत्रिका एप आदि का प्रमुख योगदान है। ये चैनल किसानों की सभी समस्याओं का निस्तारण करने में मील का पत्थर सिद्ध हो रहे है।

REFERENCES

1. भारतीय कृषि समस्या और समाधान, www.kisanhelp.in
2. कलराज मिश्रा, किसानों की समस्याएं व निवारण (kalrajmishra.com/1Eola4)
3. Yojana, 2017 tranfarmingindia.may 2017
4. किसानों की दयनीय स्थिति का कारण और उपाय (Dr. Alok Pandey, ISSN Print 24542679)
5. किसान समाधान सर्वेक्षण, 2018–19, (Google App)
6. डी.डी. नेशनल चैनल, मु. नई दिल्ली, भारत, स्थापना 15 सित. 1959
7. कृषक जगत अखबार – पता : 14, प्रेस कॉम्प्लेक्स, नगर जोन–1, Post Bag No. 37, 462011, मध्य प्रदेश
8. कलयुग की कलम : दैनिक वेब न्यूज चैनल, प्रधान सम्पादक महेन्द्र सिंह पटेल, RNI No. MP HIN 2012/60651
9. मेहनतकश किसान चैनल (mehnatkashkishan.com)
10. एग्रीकल्चर पोर्टल (www.krishi.rajasthan.gov.in)
11. भारतीय किसान और उनकी मूलभूत समस्याऐ (hindi.indiawaterportal.org)
12. स्वयं के व्यक्तिगत विचारों व अनुभव के आधार पर